This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **499**

Unique Paper Code : **205555** **D**

Name of the Paper : **Natak Ekanki Evam Nibandh**

(नाटक एकांकी एवम् निबंध)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : **V**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7+7+7=21

(क) प्रत्येक असंभावित घटना के मूल में यही बवंडर है । सच तो यह है कि विश्व-भर में स्थान-स्थान पर वात्याचक्र है; जल में उसे भंवर कहते हैं, स्थल पर उसे बवंडर कहते हैं, राज्य में विप्लव, समाज में उच्छृंखलता और धर्म में पाप कहते हैं । चाहे उन्हें नियम का अपवाद कहो, चाहे बवंडर, यही न ?

अथवा

क्षितिज पर सवेरे की अरुणिमा की भाँति, तेजस्वी सूर्यदेव का मादक स्वरूप, कुंती के मानस-गगन के छोर पर खिंच गया । और फिर ?—जैसे पूर्व दिशा की लालिमा, मध्याह्न का जगमगाता और प्रचंड ताप बन जाती है, ठीक वैसे ही, दोनों का अनुराग, एक उत्तप्त और विश्वव्यापी विलास बन गया ।

P.T.O.

अथवा

कालिदास अपनी भावुकता में भूल रहे हैं कि इस अवसर का तिरस्कार करके वे बहुत कुछ खो बैठेंगे । योग्यता एक चौथाई व्यक्तित्व का निर्माण करती है । शेष पूर्ति प्रतिष्ठा द्वारा होती है । कालिदास को राजधानी अवश्य जाना चाहिए ।

(ख) आजकल हम लोग ऐतिहासिक युग में जीने का दावा करते हैं । पुराना समय 'मिथकीय युग' में रहता था, जहाँ वह भाषा के माध्यम को अपूर्ण समझता था, वहाँ मिथकीय तत्वों से काम लेता था । मिथक गप्पे ..... भाषा की अपूर्णता को भरने का प्रयास है । आज भी क्या हम मिथकीय तत्वों से प्रभावित नहीं हैं ?

अथवा

कैसे मंगलमय प्रभाव की कल्पना थी और कैसी अँधेरी कालरात्रि आ गयी है ? एक-दूसरे को देखने से डर लगता है । घर मसान हो गया है, अपने ही लोग भूत-प्रेत बन गए हैं, पेड़ सूख गए हैं, लताएं कुम्हला गयीं, सरोवरों को देखना भी दुस्सह हो गया है । केवल इसलिए उनका अभिषेक हो रहा था, वह निर्वासित हो गया । उत्कर्ष की ओर उन्मुख समष्टि का उसके चैतन्य अपने ही घर से बाहर कर दिया गया, उत्कर्ष की मनुष्य की ऊर्ध्वोन्मुख चेतना की यही कीमत सनातनकाल से अदा की जाती है । इसलिए जब कीमत अदा कर ही दी गयी, तो उत्कर्ष कम-से-कम सुरक्षित रहे, यह चिंता स्वाभाविक हो जाती है ।

(ग) आनंद की सिद्धावस्था या उपभोग-पक्ष को लेकर चलने वाले काव्यों के उदाहरण हैं— आरूर्यासप्तशती, गाथासप्तशती, अमरुशतक, गीतगोविन्द तथा बिहारी-सतसई, रीतिकाल के कवियों के फुटकल शृंगारी पद्य, रास पंचाध्यायी ऐसे वर्णनात्मक काव्य तथा आजकल की अधिकांश छायावादी कविताएँ । फारसी, उर्दू के शेर और ग़ज़लें । अंग्रेजी की लीरिक कविताएँ (Lyrics) तथा कई प्रकार की वर्णनात्मक कविताएँ ।

अथवा

यथार्थवाद की विशेषताओं में प्रधान है लघुता की ओर साहित्यिक दृष्टिपात । उसमें स्वभावत: दु:ख की प्रधानता और वेदना की अनुभूति आवश्यक है । लघुता से मेरा तात्पर्य है साहित्य के माने हुए सिद्धांत के अनुसार महत्ता के काल्पनिक चित्रण से अतिरिक्त व्यक्तिगत जीवन के दु:ख और अभावों का वास्तविक उल्लेख ।

2. प्रसादयुगीन नाटकों की विशेषताएँ लिखिए । 15

अथवा

हिंदी नाटक के विकास में भारतेंदु-युगीन नाटकों के योगदान पर विचार कीजिए ।

3. नाटक के तत्वों के आधार पर 'कोणार्क' नाटक की समीक्षा कीजिए । 15

अथवा

"'अजातशत्रु' मानवता के उच्चतम आदर्शों का पूर्ण व्यंजक नाटक है ।" स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

"'आषाढ़ का एक दिन' नाटक समसामयिक युगबोध का सटीक उदाहरण है ।" स्पष्ट कीजिए ।

P.T.O.

4. एकांकी के तत्वों के आधार पर 'शिवाजी का सच्चा स्वरूप' एकांकी की समीक्षा कीजिए । 8

अथवा

'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए ।

5. हिंदी निबंध के विकास में 'हज़ारी प्रसाद द्विवेदी' के निबंधों की भूमिका स्पष्ट कीजिए । 8

अथवा

द्विवेदीयुगीय हिंदी निबंधों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

6. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध में ललित निबंधों की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । 8

अथवा

'यथार्थवाद और छायावाद' निबंध के कथ्य की समीक्षा कीजिए ।